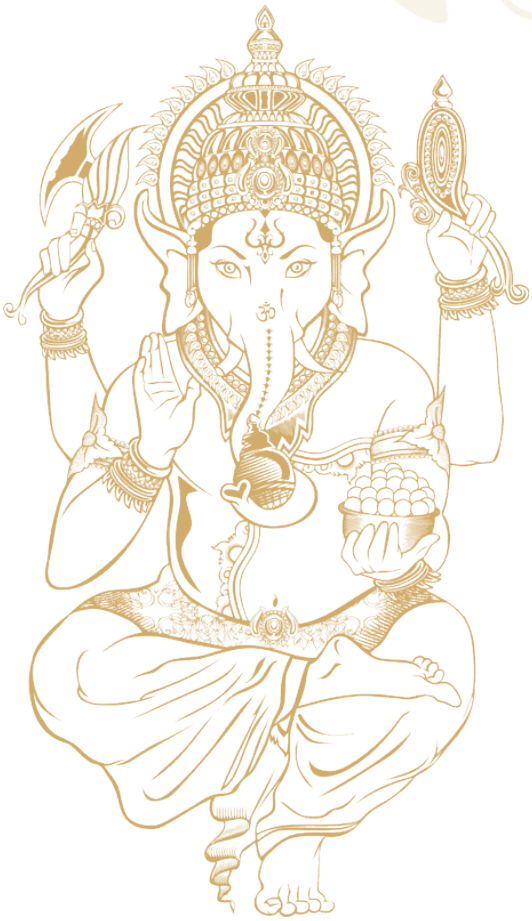

Ashish

Juhi kumari

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119919901

Model: Horoscope-Matching

Order No: 119919901 Date: 28/10/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
17/08/1986	जन्म तिथि	12/11/1998
रविवार	दिन	गुरुवार
घंटे 17:00:00	जन्म समय	17:20:00 घंटे
घटी 29:11:05	जन्म समय(घटी)	28:13:17 घटी
India	देश	India
Darbhanga	स्थान	Darbhanga
26:10:00 उत्तर	अक्षांश	26:10:00 उत्तर
85:54:00 पूर्व	रेखांश	85:54:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:13:36	स्थानिक संस्कार	00:13:36 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:19:33	सूर्योदय	06:02:41
18:21:02	सूर्यास्त	16:58:17
23:40:07	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:17
मकर	लग्न	वृष
शनि	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
धनु	राशि	सिंह
गुरु	राशि-स्वामी	सूर्य
उत्तराषाढ़ा	नक्षत्र	मघा
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	केतु
1	चरण	4
आयुष्मान	योग	ऐन्द्र
कौलव	करण	गर
भे-भैरव	जन्म नामाक्षर	मे-मेनका
सिंह	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
मानव	वश्य	वनचर
नकुल	योनि	मूषक
मनुष्य	गण	राक्षस
अन्त्य	नाड़ी	अन्त्य
मूषक	वर्ग	मूषक

ACHARYA RAVINS KUMAR MISHRA
LUCKNOW HANUMAN SETU MANDIR
(मुख्यमंत्री आवास गोमती नगर लखनऊ)
9559152997
shubhmamishra26@gmail.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 4वर्ष 8मा 19दि		07:50:15	मक	लग्न	वृष	03:17:03	केतु 0वर्ष 2मा 11दि	
राहु		00:36:01	सिंह	सूर्य	तुला	26:02:48	चन्द्र	
07/05/2008		29:30:29	धनु	चंद्र	सिंह	12:57:31	23/01/2025	
07/05/2026		17:56:05	धनु	मंगल	सिंह	27:38:17	23/01/2035	
राहु	18/01/2011	13:15:58	कर्क	बुध	वृश्चि	18:48:16	चन्द्र	23/11/2025
गुरु	13/06/2013	27:12:08	कुंभ व	गुरु व	कुंभ	24:19:30	मंगल	24/06/2026
शनि	19/04/2016	16:21:16	कन्या	शुक्र	तुला	29:24:01	राहु	24/12/2027
बुध	06/11/2018	09:28:50	वृश्चि	शनि व	मेष	04:48:09	गुरु	24/04/2029
केतु	25/11/2019	28:58:54	मीन व	राहु व	सिंह	03:58:16	शनि	23/11/2030
शुक्र	24/11/2022	28:58:54	कन्या व	केतु व	कुंभ	03:58:16	बुध	24/04/2032
सूर्य	19/10/2023	24:44:05	वृश्चि व	हर्ष	मक	15:13:45	केतु	23/11/2032
चन्द्र	19/04/2025	09:34:54	धनु व	नेप	मक	05:49:45	शुक्र	24/07/2034
मंगल	07/05/2026	11:10:47	तुला	प्लूटो	वृश्चि	13:23:24	सूर्य	23/01/2035

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:40:07 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:17

लग्न-चलित

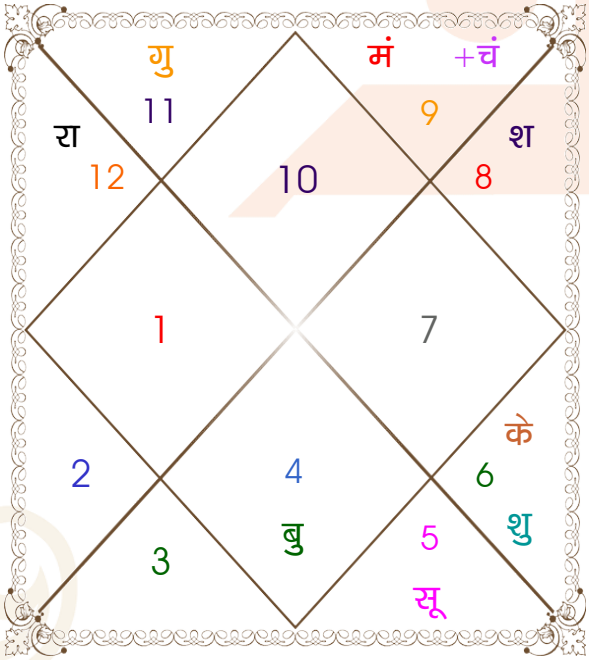

लग्न-चलित

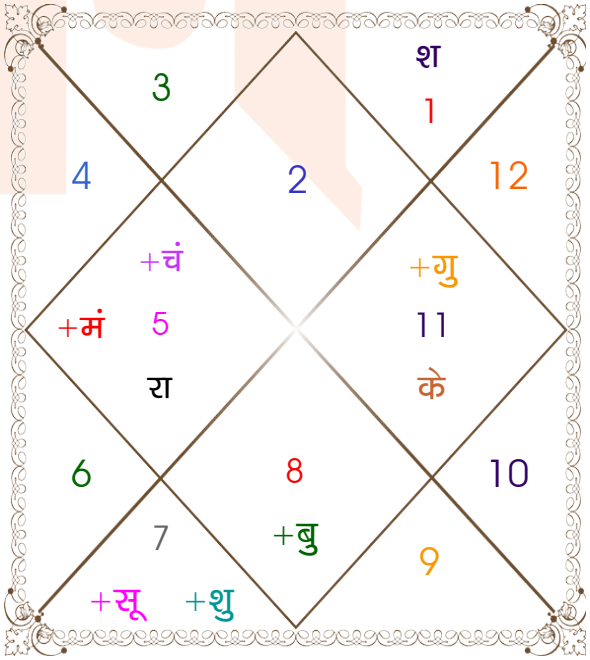

ACHARYA RAVINS KUMAR MISHRA
LUCKNOW HANUMAN SETU MANDIR
(मुख्यमंत्री आवास गोमती नगर लखनऊ)
9559152997
shubhmamishra26@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	नकुल	मूषक	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	धनु	सिंह	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	8.50		

कुल : **8.5 / 36**

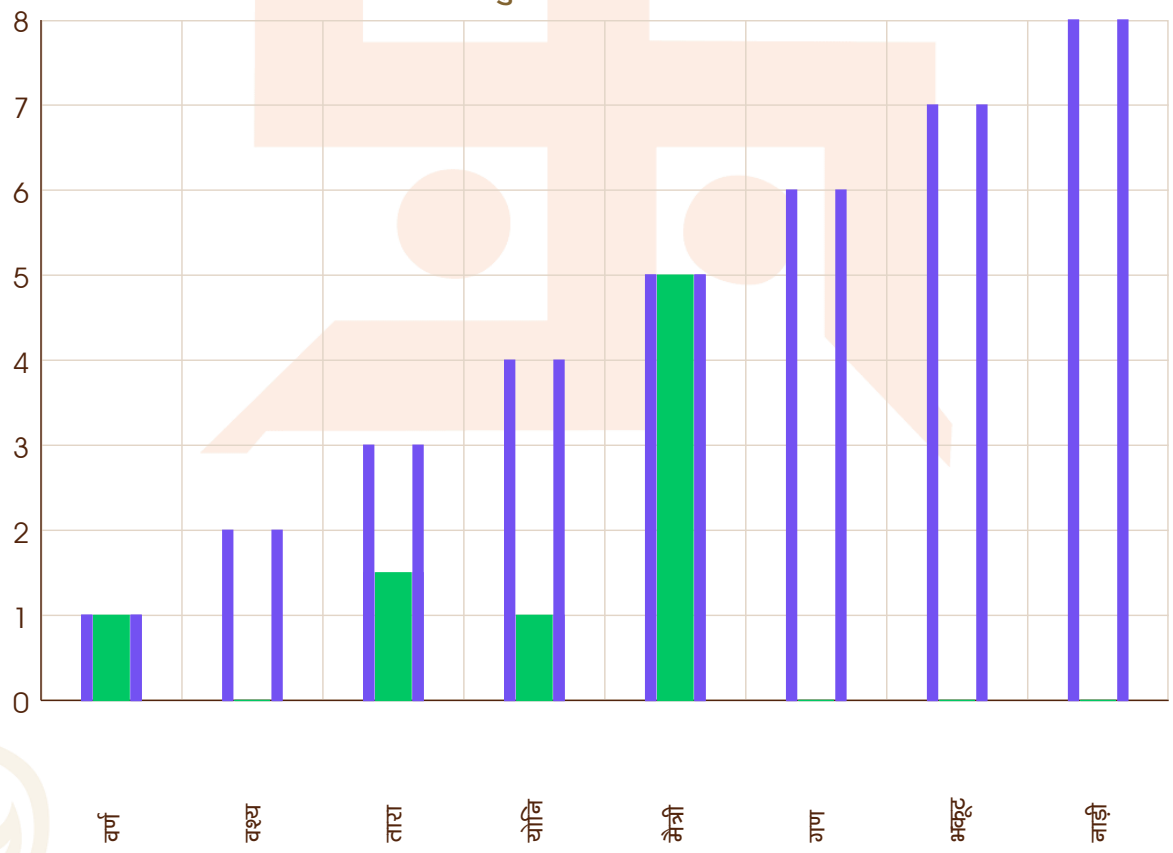

ACHARYA RAVINS KUMAR MISHRA
LUCKNOW HANUMAN SETU MANDIR
(मुख्यमंत्री आवास गोमती नगर लखनऊ)
9559152997
shubhmamishra26@gmail.com

अष्टकूट मिलान

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

ीपी का वर्ग मूषक है तथा श्रनीप ानउंतप का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ीपी और श्रनीप ानउंतप का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

ीपी मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल ीपी कि कुण्डली में द्वादश भाव में धनु राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र ीपी कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

श्रनीप ानउंतप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु श्रनीप ानउंतप कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।

ACHARYA RAVINS KUMAR MISHRA
LUCKNOW HANUMAN SETU MANDIR
(मुख्यमंत्री आवास गोमती नगर लखनऊ)
9559152997
shubhmamishra26@gmail.com

अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि श्रनीप ानउंतप कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु ीपेी कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ीपेी तथा श्रनीप ानउंतप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

ACHARYA RAVINS KUMAR MISHRA
LUCKNOW HANUMAN SETU MANDIR
(मुख्यमंत्री आवास गोमती नगर लखनऊ)
9559152997
shubhmamishra26@gmail.com

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ीपी का वर्ण क्षत्रिय तथा श्रनीप ानउंतप का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों ही दम्पत्ति अति ऊर्जावान, साहसी, उद्यमी होंगे साथ ही दोनों एक-दूसरे के साथ सद्भाव एवं प्रेम से जीवन बितायेंगे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर एक-दूसरे की सहायता से सुखी एवं समृद्ध परिवार का निर्माण करने में योगदान देते रहेंगे।

वश्य

ीपी का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं श्रनीप ानउंतप का वश्य वनचर अर्थात सिंह (शेर) है। जिसके कारण यह मिलान अशुभ मिलान होगा। पशु हमेशा वनचरों (सिंह) के शिकार होत रहते हैं। पशुओं को हमेशा शेर से स्वयं की रक्षा करनी पड़ती है क्योंकि शेर, पशुओं को मारकर खा जाते हैं। इसी प्रकार यदि ीपी चतुष्पद एवं श्रनीप ानउंतप वनचर हो तो श्रनीप ानउंतप समय समय पर क्रूर स्वभाव, निर्दयी एवं हावी रहने वाली प्रवृत्ति की हो सकती है। फलस्वरूप श्रनीप ानउंतप ीपी पर कभी-कभी हावी रहेगी जो ीपी एवं उसके परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। श्रनीप ानउंतप का यह स्वभाव पूरी तरह से घर एवं परिवार की शांति को भंग कर सकता है तथा श्रनीप ानउंतप के असामान्य व्यवहार के कारण घर में अव्यवस्था एवं कोलाहल का माहौल रह सकता है।

तारा

ीपी की तारा विपत तथा श्रनीप ानउंतप की तारा मित्र है। ीपी की तारा विपत होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ीपी एवं ीपी के परिवार के लिए यह विवाह कष्टदायक हो सकता है तथा जिसके परिणामस्वरूप कष्ट, हानि एवं विपत्ति की संभावना बनी रहेगी। यद्यपि श्रनीप ानउंतप हमेशा अपने पति एवं परिवार के लिए सहयोगी एवं मददगार बनी रहेगी किंतु अपने पति के दुर्भाग्य का शिकार होकर श्रनीप ानउंतप को भी कष्ट झेलना पड़ सकता है। दुर्भाग्यवश बच्चे भी एवं विपन्नता का शिकार हो सकते हैं।

योनि

ीपी की योनि नकुल है तथा श्रनीप ानउंतप की योनि मूषक है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र

की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ोपी एवं श्रनीप ानउंतप दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि ोपी एवं श्रनीप ानउंतप के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण ोपी एवं श्रनीप ानउंतप जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

ोपी का गण मनुष्य तथा श्रनीप ानउंतप का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। अतः श्रनीप ानउंतप का निर्दयी, निष्ठुर एवं कड़ा स्वभाव रहेगा जिसके कारण ोपी एवं उसके परिवार के सदस्यों का जीवन कष्टपूर्ण हो सकता है। साथ ही पति-पत्नी के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा बना रह सकता है। जिसके कारण तलाक एवं मुकदमे की संभावना भी बन सकती है।

भकूट

ोपी से श्रनीप ानउंतप की राशि नवम भाव में स्थित है तथा श्रनीप ानउंतप से ोपी की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। ोपी की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

ोपी की नाड़ी अन्त्य है तथा श्रनीप ानउंतप की नाड़ी भी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ोपी एवं श्रनीप ानउंतप की एक ही नाड़ी अन्त्य होने के कारण शरीर में श्लेष्मा की अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। जोकि भावी दम्पत्ति के लिए खतरे की सूचक हैं। जिसके प्रभाववश संतान की मृत्यु भी संभव है। आपको श्वांस की तकलीफ, दमा जैसी बीमारियां तथा कमजोर स्वास्थ्य का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संतान मानसिक

ACHARYA RAVINS KUMAR MISHRA
LUCKNOW HANUMAN SETU MANDIR
(मुख्यमंत्री आवास गोमती नगर लखनऊ)
9559152997
shubhmamishra26@gmail.com

रोग, सुस्त विकास एवं निम्न बौद्धिक स्तर की शिकार हो सकती हैं।

ACHARYA RAVINS KUMAR MISHRA
LUCKNOW HANUMAN SETU MANDIR
(मुख्यमंत्री आवास गोमती नगर लखनऊ)
9559152997
shubhmamishra26@gmail.com

मेलापक फलित

स्वभाव

ोपी की जन्म राशि अग्नि तत्व युक्त धनु तथा श्रनीप ानउंतप की राशि भी अग्नि तत्व युक्त सिंह राशि है। दोनों की तत्वों में समानता के कारण संबंधों में मधुरता रहेगी तथा वैवाहिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा । अतः यह मिलान उत्तम रहेगा।

ोपी की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा श्रनीप ानउंतप की जन्म राशि का स्वामी सूर्य परस्पर मित्र राशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से ोपी और श्रनीप ानउंतप के मध्य प्रेम सहानुभूति तथा समर्पण का भाव रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देने में तत्पर रहेंगे। वे एक दूसरे के गुणों की मुक्त भाव से प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की सच्चे मित्र की तरह उपेक्षा करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन की सुख शांति बनी रहेगी तथा परस्पर सम्मान पूर्वक एक दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करके व्यवहार करेंगे।

ोपी और श्रनीप ानउंतप की राशियां परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष कहलाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ फलों में न्यूनता आएगी जिससे मानसिक परेशानी का भाव रहेगा। साथ ही अंहकार एवं उपेक्षा की भावना भी एक दूसरे के प्रति रहेगी जिससे आपसी संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। अतः यदि ोपी और श्रनीप ानउंतप परस्पर सामंजस्य की प्रवृति का पालन करें तथा एक दूसरे के साथ समान रूप से व्यवहार करें तो वैवाहिक जीवन में सुखद क्षणकी प्राप्ति हो सकती है।

ोपी का वश्य चतुष्पद एवं श्रनीप ानउंतप का वश्य वनचर है नैसर्गिक रूप से चतुष्पद एवं वनचर में विशेष समानता का भाव नहीं होता है। अतः ोपी और श्रनीप ानउंतप की अभिरूचियों में अंतर रहेगा। उनकी शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर विषमता रहेगी फलतः काम संबंधों में एक दूसरे से सन्तुष्टि अल्प मात्रा में ही होगी तथा इसके प्रति उनके विभिन्न दृष्टि कोण रहेंगे।

ोपी का वर्ण क्षत्रिय तथा श्रनीप ानउंतप का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः इनकी कार्य क्षमताएं समान रहेंगी तथा पराक्रमी तथा साहसिक कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे फलतः इनका कार्य क्षेत्र सुदृढ़ रहेगा।

धन

ोपी और श्रनीप ानउंतप की तारा सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। इन पर भकूट का प्रभाव भी सम ही होगा लेकिन ोपी पर मंगल का अशुभ प्रभाव रहेगा जिसके प्रभाव से समय समय पर आर्थिक उतार चढ़ाव का सामना कर सकते है। साथ ही लाभ एवं आय स्रोतों में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे।

इसके अतिरिक्त ोपी की प्रवृति अनावश्यक रूप से व्यय करने की भी होगी

जिसका आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः उन्हें चाहिए कि अनावश्यक व्यय की इस प्रवृति पर नियंत्रण रखें तभी उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल रह सकती है।

स्वास्थ्य

ोपी और श्रनीप ानउंतप दोनों का जन्म अन्त्य नाड़ी में हुआ है। अतः इन पर नाड़ी दोष का प्रबल प्रभाव रहेगा जिससे श्रनीप ानउंतप का स्वास्थ्य प्रभावित होगा तथा ठण्ड, कफ तथा खांसी आदि से उन्हें समय समय पर परेशानी की अनुभूति होगी। साथ ही गले से संबंधित कष्ट भी हो सकता है। मंगल का भी दोनों के स्वास्थ्य पर अशुभ प्रभाव होने से वे धातु या गुप्त रोगों से परेशानी की अनुभूति करेंगे तथा श्रनीप ानउंतप के गर्भपात की संभावना भी रहेगी एवं ोपी हृदय रोग से असुविधा प्राप्त करेंगे। इस प्रकार मंगल एवं नाड़ी दोष के प्रभाव को देखकर मिलान नहीं करना चाहिए तथापि इसके प्रभाव को अल्प करने के लिए ोपी और श्रनीप ानउंतप दोनों को हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से ोपी और श्रनीप ानउंतप का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त ोपी और श्रनीप ानउंतप के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में श्रनीप ानउंतप के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन श्रनीप ानउंतप को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में श्रनीप ानउंतप को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से ोपी और श्रनीप ानउंतप सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार ोपी और श्रनीप ानउंतप का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

श्रनीप ानउंतप के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि श्रनीप ानउंतप धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो

सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से श्रनीप ानउंतप के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी श्रनीप ानउंतप का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी श्रनीप ानउंतप से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

ीपेी के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को ीपेी अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी ीपेी के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण ीपेी के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।